www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर

वर्ष: 88 अंक 6
पौष कृष्णा चतुर्थी
विक्रम संवत 2070
कलि संवत 5115
21 दिसम्बर 2013 से 5 जनवरी 2014 तक
दयानन्दाब्द 189
सृष्टि सम्वत् 1, 96, 08, 53, 114

मुख्य सम्पादक :
पं. अमर सिंह आर्य, 9214586018
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

संपादक मंडल:
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजय सिंह भाटी, जोधपुर
डॉ. सुधीर आर्य, बगरू
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुन देव चड्ढा, कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा, जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य, अलवर

प्रकाशक:
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
राजापार्क, जयपुर
दूरभाष- 0141-2621879
प्रकाशन: दिनांक 1 व 15
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता
अमर मुनि वानप्रस्थी
सम्पादक आर्य मार्तण्ड, सेढ़ का टीला
केडलगंज, अलवर (राज.)
मोबाईल- 9214586018

मुद्रक:
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स,जयपुर
ग्राफिक्स :
भार्गव प्रिन्टर्स, दारुकूटा, अलवर
Email: bhargavaprinters@gmail.com
Email:aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

अंक सौजन्य- श्री वैदिक कन्या उ. मा. वि. आबूरोड़ (राज.)

श्री वैदिक कन्या उ. मा. विद्यालय
आबूरोड़ (राज.)

विद्यालय विकास के पुरोधा
स्व. श्री जेठमल जी आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा चलाये गये स्त्री जाति के उद्धार, नारी जागृति, शिक्षा प्रसार, छुआछूत उन्मूलन के आन्दोलनों की चिंगारी आबू रोड़ तक पहुँचकर ज्वाला के रूप में परिवर्तित हो गयी। जिसके तहत नगर में आज से ठीक 92 वर्ष पूर्व सन् 1920 की चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर उत्साही आर्य समाजी कार्यकर्ताओं ने पोस्ट ऑफिस के पास कामेश्वरी में आर्य समाज की स्थापना की।

आर्य समाज की जड़े यहां के जनमानस में दिनों दिन गहराती चली गई, जिसके चलते देश में स्त्री शिक्षा के लिए अनेक छोटे-बड़े विद्यालय खोले गये। उसी क्रम में 1 अगस्त, 1941 में श्रावणी पर्व के दिन आबूरोड़ में सिरोही जिले का प्रथम कन्या विद्यालय, आर्य समाज के जागरूक कार्यकर्ता पंडित हजारीमल जी मिश्रा, गुमानसिंह जी पानचढ़िया, नटवरलाल जी पंडित, चौथमल जी आर्य, जयनारायण जी गोपालिया, मुकन्दीलाल जी जैन, कान्तिलाल जी शाह एवं जेठमल जी आर्य के पुरुषार्थ से एक छोटी सी पाठशाला की आधारशिला रखी गई।

सर्वप्रथम टांक गली में छीतरमल जी सिंघल, जिनके मकान में विद्यालय की स्थापना हुई। निमित्त मात्र किराये पर विद्यालय 5 वर्षो तक चलता रहा। उस समय विद्यालय में 9 छात्राओं ने प्रवेश लिया था। छात्राओं की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए महसूस किया गया कि किराये का भवन छोटा पड़ने लगा था। इसे ध्यान में रखते हुए आर्य समाज आबूरोड़ के कार्यकर्ताओं ने सन् 1945-46 में शहर के अम्बाजी रोड़ चौराहे पर एक पुराना भवन खरीदा, जिसमें कई वर्षो तक विद्यालय चला। यह पुराना भवन भी कुछ वर्षो बाद छोटा पड़ने लगा और विद्यालय के लिए उपयुक्त नहीं होने के कारण प्रतिवर्ष छात्राओं का प्रवेश बंद करना पड़ता था। विद्यालय भवन की व्यवस्था ठीक करने के लिए आधुनिक ढंग का भवन बनाने की अभिलाषा कार्यकर्ताओं के मन में जागृत हुई एवं विद्यालय के लिए आधुनिक ढंग का भवन होना आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य

समस्त आर्यजनों को नव वर्ष (2014) की हार्दिक शुभकामनाएँ

पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है, क्योंकि पुस्तके अन्त:करण को उज्ज्वल करती हैं। महात्मा गाँधी

www.thearyasamaj.org

हो गया था। अत: उत्साही कार्यकर्ताओं ने दानी महानुभावों के सहयोग से शहर के मध्य में स्थित गांधीपार्क के पास एक जमीन बम्बई राज्य से दिनांक 18.1.1952 को खरीदकर विद्यालय भवन का उद्घाटन श्रीमान मधुकर वामन राव देसाई, आई.ए.एस., जिला कलक्टर, पालनपुर के कर कमलों द्वारा किया गया।

भवन व्यवस्था- विद्यालय भवन, आर्य समाज आबूरोड़ का निजी भवन है, जो तनी मंजिला ई-टाइप विशाल पक्का भवन बना हुआ है। इस भवन में तीन हॉल, अध्यापन कार्य के लिए 41 कमरे तथा 10 कमरे कार्यालय, पुस्तकालय, भण्डारगृह आदि के लिए उपलब्ध है। इसके अलावा सम्पूर्ण विद्यालय के कमरों में पर्याप्त बिजली, पंखे, माइक व फर्नीचर की व्यवस्था है। विद्यालय में छात्र-छात्राओं के लिए पर्याप्त मात्रा में मूत्रालय, शौचालय व पीने के पानी के लिए ट्यूब वेल की व्यवस्था है।

इसके अतिरिक्त विद्यायल में प्रत्येक अध्यापन कक्ष में कुल लगभग 45 कैमरे लगाये गये है। इसका उद्देश्य विद्यालय में सतत् एवं सुव्यवस्थित शिक्षण कार्य करवाना है और विद्यालय में चल रही गतिविधियों का निरीक्षण करना है।

संस्था का उद्देश्य- इस विद्यालय का मुख्य उद्देश्य आज के समाज की बालिकाओं को मातृमान, पितृमान, आचार्यवान्, पुरुषो वेद के आदेशानुसार सत्य सनातन वैदिक सिद्धांतों की शिक्षा से शिक्षित एवं सुसंस्कृत बनाकर एक सबल और स्वावलम्बी भारतीय आदर्श को निभाने में समर्थ नारी बनाना है, जो अवसर आने पर अपने देश, जाति एवं राष्ट्र के प्रति अपने पावन कर्तव्यों को निभाने में समर्थ हो सके।

विद्यालय प्रबंधन- इस विद्यालय का प्रबंध आर्य समाज आबूरोड़ द्वारा मनोनीत प्रबंध समिति द्वारा होता है। विशेष रूप से विद्यालय के कर्णधार स्व. श्री जेठमल जी आर्य, जिन्होंने अपने जीवन के अमूल्य क्षण विद्यालय के बहुमुखी विकास हेतु भेंट किये। आपके अथक प्रयासों के परिणाम स्वरूप आज यह विद्यालय पूरे सिरोही जिले में सर्वश्रेष्ठ संस्था के रूप में प्रसिद्ध है।

पुस्तकालय- पुस्तकालय विद्यालय का महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा विद्यालय का स्वच्छ व निर्मल प्रतिबिम्ब दिखाई देता है, जो कि एक विकसित व सुसंस्कृत विद्यालय का होना चाहिये। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर इस पुस्तकालय में 11250 पुस्तके हैं, जिनमें समस्त विषयों के अलावा साहित्य, काव्य, धर्म, विज्ञान व बाल साहित्य सम्मिलित है। सप्ताह में एक बार प्रत्येक छात्रा को पुस्तकालय से रूचि के अनुसार पुस्तके प्रदान की जाती है।

संचायिका योजना- बालिकाओं में बचत की आदत डालने के लिए आर्यबाला सहकारी समिति लि. का पंजीयन करवाया गया है। इस सहकारी समिति का विद्यालय में काउंटर है। प्रतिदिन छात्राऐं बचत की राशि इस समिति में जमा करवाती है, जिसकी उन्हें पासबुक दी जाती है।

संगणक (कम्प्यूटर) शिक्षा- इस वैज्ञानिक युग में मानव मस्तिष्क का कार्य कम्प्यूटर करने लगा है। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में जुलाई, 1999 से कम्प्यूटर शिक्षा आरम्भ की गई। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार विद्यालय में कक्षा 4 से 12 तक की छात्र-छात्राओं को कम्प्यूटर शिक्षा प्रदान की जा रही है।

मान्यता- विद्यालय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर से उच्च माध्यमिक स्तर की स्थायी मान्यता प्राप्त है। उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में कला वर्ग के तहत इतिहास, राजनीति विज्ञान, संस्कृत, हिन्दी साहित्य तथा अर्थशास्त्र ऐच्छिक विषयों का अध्यापन करवाया जाता है।

शिक्षा पद्धति- विद्यालय में राजस्थान राज्य के शिक्षा विभाग द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार विषय पढ़ाये जाते है। वर्तमान समय की मांग को देखते हुए कक्षा प्रथम से ही विद्यार्थियों को अंग्रेजी तथा कक्षा दूसरी से संस्कृत अतिरिक्त विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। प्रतिदिन का प्रारम्भ यज्ञ हवन के साथ होता है तथा साथ ही धार्मिक, नैतिक शिक्षा, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य की शिक्षा द्वारा छात्राओं में सृजनात्मक व व्यावहारिक कुशलता का विकास किया जाता है, ताकि विद्यालय से निकली हुई प्रत्येक बालिका सच्ची देशभक्त और आदर्श माताएं बने। इस नगर में विद्यालय की स्थापना के पूर्व शायद ही किसी बालिका ने वेद मंत्र का अध्ययन किया हो, लेकिन आज इस विद्यालय के कारण सैकड़ों बालिकाऐं विद्यालय में प्रतिदिन संध्या, हवन और वेद मंत्रों का उच्चारण करती है। सहपाठ्येत्तर प्रवृतियों जैसे बाल सभा तथा आंतरिक मूल्यांकन में निबंध, भाषण, कविता-पाठ, संगीत, सिलाई-कढ़ाई द्वारा छात्राओं के बहुमुखी विकास पर बल दिया जाता है।

अंत में आर्य समाज आबूरोड़ एवं श्री वैदिक कन्या विद्यालय आबूरोड़ के अधिकारियों, दानदाताओं और विद्यालय के कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारियों के प्रति आभार प्रदर्शित करता हूँ जिनके सद्प्रयत्नों से यह विद्यालय गत 72 वर्षों से निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है।

-पूनमचंद शास्त्री, प्रधानाचार्य

यज्ञ करने से लाभ

* जल, वायु, भूमि आदि की शुद्धि होती है।
* उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु तथा विशेष सुख शान्ति की (स्वर्ग की) प्राप्ति होती है।
* अनेक रोगों से निवृत्ति मिलती है तथा मान सम्मान में भी वृद्धि होती है।
* प्रकृति का संतुलन बना रहता है अर्थात् ऋतुचक्र भी सही चलता रहता है।
* वातावरण में विद्यमान हानिकारक-रोगकारक कीटाणुओं का नाश होता है।
* सुनने में आता है कि घी के एक बूंद से पाँच अरब परमाणु निकलते हैं जो वायु में विद्यमान रोगाणुओं का नाश करते हैं।
* यज्ञ के धुएँ से वायुमण्डल के ओजोन पर्त में बने छिद्र बंद हो जाते हैं जिससे कि पृथ्वी पर पराबैंगनी किरणें अंतरिक्ष से नहीं आ पाती हैं।
* व्यक्ति की धर्म के प्रति रुचि, प्रेम व विश्वास में वृद्धि होती है।
* जिस घर में दैनिक हवन होता है वहाँ कोई बच्चा अल्पायु में किसी संक्रामक रोग से मृत्यु को प्राप्त नहीं होता है।
* यज्ञ करने से विषैली गैसों का नाश होता है।
* यज्ञ करने से इस लोक व परलोक दोनों जगह सुख शांति व समृद्धि की प्रापित होती है।

राह भले ही पथरीली हो, यात्रा कष्टदायक हो। सफलता का दिन दूर हो सकता है, लेकिन उसका आना अनिवार्य है। सुभाषचंद्र बोस

www.thearyasamaj.org

आइए सब मिलकर बालोतरा चलें-

स्नेह आमन्त्रण

सार्वदेशिक आर्यवीर दल, राजस्थान प्रान्त का
विशाल प्रान्तीय आवासीय योग व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर
दिनांक 24 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2013 तक
आयोजक- आर्य समाज शास्त्री चौक, बालोतरा जिला बाड़मेर (राज.)
शिविर स्थल- धोरानाड़ी, पचपदरा-बालोतरा सड़क मार्ग के बीच, तह. पचपदरा, बाड़मेर

मान्यवर बन्धुओं एवं आर्य महानुभावो,

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा संसार के उपकार के लिए स्थापित आर्य समाज की युवा इकाई आर्यवीरदल (राज.) का प्रान्तीय स्तर का योग-व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर आर्य समाज बालोतरा के तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है।

सार्वदेशिक आर्यवीरदल, राजस्थान प्रान्त के ग्रीष्मकलीन प्रान्तीय शिविर

16. संस्कारभारती पी.जी. कॉलेज बगरू (जयपुर) 2009- अब से कोई पचासों वर्ष पूर्व जयपुर में पं. बुद्ध देव जी वेदालंकार (स्वामी समर्पणानन्द जी) का व्याख्यान हुआ था, इस व्याख्यान को सांगानेर क्षेत्र के गाँव खातीपुरा निवासी श्री नाथुराम जी ने सुना और प्रभावित होकर जयपुर के किशनपोल बाजार आर्य समाज में जाने लगे। धीरे-धीरे ऐसा रंग चढ़ा कि ऋषि दयानन्द के पक्के अनुयायी होकर आर्य समाजी बन गए। परिणाम स्वरूप उन्होंने अपने पुत्र हरिदेव को गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में पढ़ाया तथा पौत्र डॉ. सुधीर और पौत्री हेमा कुमार को क्रमशः गुरुकुल चित्तौड़ व प्रभात आश्रम (मेरठ) तथा कन्या गुरुकुल देहरादून में प्रविष्ट कराया। अपने अनुज छोटूराम जी के पुत्र देवेन्द्र शास्त्री को गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) में पढ़ाया। नाथुराम जी जयपुर क्षेत्र के सबसे वरिष्ठ आर्य समाजियों में गिने जाते हैं। इनके भतीजे देवेन्द्र शास्त्री राजस्थान सरकार के संस्कृत विभाग में अध्यापक हैं तथा आर्यवीर दल राजस्थान के प्रान्तीय कार्यकारी संचालक हैं। पौत्र डॉ. सुधीर शर्मा बगरू में पी.जी. कॉलेज सफलतापूर्वक चला रहे हैं।

डॉ. सुधीर जी द्वारा संचालित संस्कार भारती पी.जी. कॉलेज बगरू में दिनांक 24 से 31 मई 2009 तक विशाल प्रान्तीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में प्रान्त के कोने-कोने से 225 आर्यवीरों ने भाग लिया। आठ दिनों तक निरन्तर शारीरिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक प्रशिक्षण चलता रहा। 30 मई को सायं 5 से 8 बजे तक बगरू शहर में विशाल शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में दिखाए गए व्यायाम-प्रदर्शन को देखकर शहरवासी दंग रह गए थे। 31 मई को प्रातः 8 से 12 बजे तक समापान समारोह हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें भीलवाड़ा आर्य समाज के प्रधान श्री विजय शर्मा जी मुख्य अतिथि तथा स्वामी सुमेधानन्द जी (पिपराली) अध्यक्ष थे। समारोह को न्यायाधीश पी.एस. तोमर, आचार्य रामपाल जी (जयपुर), अमरसिंह जी आर्य (अलवर), जगदीश प्रसाद आर्य (जखराना), मदनमोहन आर्य (गंगापुर), स्वामी देवानन्द जी, श्री यशपाल, डॉ. सुधीर शर्मा आदि ने भी सम्बोधित किया। शिक्षकों में श्री रामनारायण शास्त्री (बौद्धिकाध्यक्ष), नन्दकिशोर जी (कुरुक्षेत्र), यतीन्द्रशास्त्री, पंकज आर्य, अभिषेक व सुशील (अजमेर), सुनील जोशी, रमेश गोस्वामी (कोटा), नरेन्द्र मित्तल (बूँदी), योगेन्द्र गंगापुर, सत्यप्रिय व उनके भ्राता उदयपुर के प्रान्तीय मंत्री भवदेव शास्त्री, सह संचालक दिनेश आर्य जोधपुर आदि प्रमुख थे। शिविर को सफल बनाने में श्री दीपक गर्ग, अनिल आर्य (गंगापुर), विवेक आर्य, रवि आर्य, अनिल (खातीपुरा), दुर्गेश चौधरी, सत्येन्द्र आर्य (खैरथल), सतीश आर्य (जिला संचालक, अलवर), सुभाष शास्त्री (डूंगरगढ़), ललित आर्य (भरतपुर) आदि का विशेष योगदान रहा।

इस शिविर हेतु लोटस डेयरी के प्रमुख श्री डी.डी. वर्मा ने दस टीन देसी घी दान स्वरूप देकर विशेष सहयोग दिया था, झालानी परिवार बगरू, गोपाल गुप्ता बिल्डर्स (अनुकम्पागुप), जयपुर शहर एवं जिले की सभी आर्य समाजों ने भी विशिष्ट सहयोग देकर अपना योगदान दिया। प्रान्त के बाहर से भी एक वरिष्ठ शिक्षक अजय आर्य मेरठ उ.प्र. से पधारे थे। प्रसिद्ध उद्योगपति व भीलवाड़ा समाज के प्रधान श्री विजय शर्मा (मुख्य अतिथि) ने आर्य समाज भीलवाड़ा की ओर से आर्यवीर दल राजस्थान के प्रांतीय कोष में एक लाख रूपये का दान दिया। प्रांतीय संचालक श्री सत्यवीर आर्य ने आगामी शिविर के लिए श्री स्वामी सुमेधानन्द जी को ध्वज प्रदान करते हुए शिविर समाप्ति की घोषणा की। प्रधान संचालक डॉ. देवव्रत जी का आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ।

17. वैदिक आश्रम पिपराली (सीकर) 2010- यह कर्ण परम्परा से सुनते आए हैं कि शेखावाटी क्षेत्र में अतीत में आर्य समाज का प्रचार-प्रसार जोर-शोर से होता रहा है और उसका प्रभाव वर्तमान में भी दिखाई पड़ता है। आज से लगभग 17 वर्ष पूर्व स्थानीय आर्यजनों के आग्रह एवं सहयोग से स्वामी सुमेधानन्द जी वैदिक आश्रम पिपराली में स्थायी रूप से विराजमान हुए। यह आश्रम जिला मुख्यालय सीकर से 12 किलोमीटर दूर सीकर-दिल्ली मार्ग पर है। यह क्षेत्र पर्यावरण की दृष्टि से शुद्ध तथा प्राकृतिक सम्पदाओं से परिपूर्ण है। स्वामी सुमेधानन्द जी ने अपनी कार्य-कुशलता एवं व्यवहार से इस क्षेत्र को अपना सा बना लिया है। प्रान्तीय संचालक जी भी सन् 2005 के अक्टूबर से अप्रैल 2008 तक यहीं रहकर सीकर के केन्द्रीय विद्यालय में अध्यापन कार्य करते रहे, उन्हीं दिनों यह विचार बना कि आश्रम में आर्यवीरदल का प्रान्तीय शिविर आयोजित किया जाए। इसी विचार के फलस्वरूप आर्यवीरदल राजस्थान का प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर 'वैदिक आश्रम पिपराली जिला-सीकर' में दिनांक 23 से 31 मई 2010 तक सफलता पूर्वक आयोजित किया गया। शिविर में राजस्थान प्रान्त के बीस जिलों तथा मध्य प्रदेश के चुने हुए 101 आर्यवीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

31 मई 2010 को सायं 5 बजे से आयोजित भव्य एवं आकर्षक दीक्षान्त (समापन) समारोह में अध्यक्षता कर रहे कर्नल जगदेव सिंह ने कहा कि प्रशिक्षकों ने इस आर्य सेना को, भारतीय सेना की तरह प्रशिक्षित किया है। जिस प्रकार सेना में आत्मरक्षा व दुश्मन को पराजित करने की तथा देश सेवा की ट्रेनिंग दी जाती है, उसी प्रकार इन आर्यवीरों को भी प्रशिक्षित किया गया है। उन्होंने आर्यवीरों से कहा कि आपने जो यहाँ सीखा है, उसे जीवन में निरन्तर जारी रखें। समारोह की मुख्य अतिथि व सीकर की जिला प्रमुख श्रीमती रीटासिंह ने कहा कि शिक्षण संस्था संचालकों को चाहिए कि वे अपने यहां इस प्रकार के शिविर आयोजित करायें जिससे भावी पीढ़ी को संस्कारित किया जा सके। कार्यक्रम में जिला परिषद के कार्यकारी अधिकारी रामनिवास जाट, सतत् शिक्षा एवं जिला साक्षरता अधिकारी हरलाल सिंह गढ़वाल, पिपराली पं.स. प्रधान संगीता मूण्ड, सरपंच राधादेवी, जगदीश फेनिन, ओमप्रकाश मोदी, सुभाष मील, पूर्व प्रधान रड़मलसिंह, विधायक के.डी. बाबर, रामेश्वर रणवां आदि अनेक गणमान्य जन एवं विशाल जनसमुदाय मौजूद था।

प्रेम हर मौसम में होने वाला फल है। यह व्यक्ति की पहुँच के अंदर है। मदर टेरेसा

www.thearyasamaj.org

इस अवसर पर किए गए व्यायाम-प्रदर्शन में संगीत के साथ सूर्यनमस्कार, भूमि नमस्कार, सर्वांग सुन्दर व्यायाम, नियुद्धम् (जूडो-कराटे), दण्ड-बैठक, लाठी व भाला संचालन, योगासन, रस्सा व लकड़ी-मलखम्ब, ऊँट और घोड़े की आकृति के साथ-साथ मानवपुल निर्माण भी आकर्षण के केन्द्र रहे। समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले आर्यवीरों को पारितोषिक देकर सम्मानित किया गया। स्वामी सुमेधानन्द जी ने व्यायाम-शिक्षकों को शाल ओढ़ाकर अभिनन्दन किया। पधारे अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट किए गए। शिविर सहयोगियों में मा. बीरबल सिंह, मा. वेदपाल, महिपाल आर्य, संजय आर्य, राजकुमार ढ़ाका, सत्यवीर कलौठ, पाचक सोहनलाल व भंवरलाल आदि प्रमुख थे। ध्वजावतरण के बाद आगामी वर्ष 2011 के प्रान्तीय शिविर के लिए 'आर्य कन्या विद्यालय समिति' अलवर के पदाधिकारियों को ध्वज प्रदान करके प्रान्तीय संचालक जी ने शिविर समाप्ति की घोषणा की।

18. आर्यकन्या विद्यालय समिति, अलवर (2011)- अलवर में लगे इस प्रान्तीय शिविर की चर्चा से पहले यह आवश्यक है कि हम अलवर में आर्यवीरदल के अतीत पर दृष्टिपात कर लें। आजादी से पहले ही अलवर में आर्यवीर दल की गतिविधियाँ संचालित हो रही थी। बुजुर्ग बताते हैं कि सन् 1945 में रूपबास में जगन्नाथ मंदिर के पास आर्यवीर दल का ऐतिहासिक शिविर लगा था, जिसमें 150 आर्यवीरों ने भाग लिया था। उस समय अलवर जिले में आर्यवीर दल का संचालन श्री छोटूसिंह आर्य कर रहे थे। शिविर में देहली से प्रधान संचालक ओम प्रकाश त्यागी और उनके सहयोगी बालदिवाकर हंस जी भी पधारे थे। इससे पूर्व लाहौर में लगे आर्यवीरदल के शिविर में अलवर से श्री छोटूसिंह आर्य, श्री कैलाशनाथ भार्गव, नवलकिशोर भार्गव आदि गए थे। इन शिविरों के बाद शहर में सन् 1945 से 50 तक शाखाएँ चलती रही इन शाखाओं में 1500 से 3000 तक संख्या होती थी। आर्यवीरदल के सहयोगियों में सर्वश्री रमेशचन्द्र शर्मा, नन्दलाल वकील, के.एन.भार्गव, लक्ष्मण यती, पदमचन्द पालावत, पंडित गंगासहाय के पुत्र पं. हेतराम आर्य, लक्ष्मणप्रसाद आर्य, मुंशीराम, विरदी चन्द, ज्ञानचन्द, डालचन्द, सत्यपाल आर्य, भीमसिंह, गुलजारीलाल माथुर, ओमप्रकाश अग्रवाल, दयाराम अग्रवाल, भगवानसिंह, नन्दलाल अग्रवाल, केहरीसिंह, नत्थुसिंह आदि प्रमुख थे। विधर्मियों से हिन्दुओं की रक्षार्थ महात्मा गांधी के आह्वान पर रथखाना बाईबाग निवासी श्री छोटेलाल शर्मा के पुत्र लक्ष्मीनारायण शर्मा अलवर से नवाखाली गए थे। 1946 में सुगनाबाई धर्मशाला रामगंज, अलवर में आर्यवीरदल ने उस समय उपेक्षित माने जाने वाले हरिजनों को भोजन कराया था। सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध आर्यवीरदल सदैव प्रखरता के साथ खड़ा रहता था। 1947 में विधर्मी लोगों के विरोध में आर्यवीरदल अग्रणी था। सभी संगठन आर्यवीरदल के नेतृत्व में कार्य करते थे।

बालोतरा शिविर के लिए-प्रधान संचालक जी का आह्वान

राजस्थान प्रांत की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों, अंतरंग सदस्यों, सदस्यों तथा राजस्थान सभा के सभी अधिकारियों सहित आर्यवीरदल राजस्थान के पदाधिकारियों, व्यायाम शिक्षकों व आर्यवीरों से अनुरोध है कि वे 24 से 31 दिसम्बर 2013 तक बालोतरा में लगने वाले आर्यवीरदल के प्रान्तीय शिविर में अधिक से अधिक संख्या में शाखानायक/आर्यवीर श्रेणी के प्रशिक्षण हेतु युवकों को अवश्य भेजें, जिससे प्रान्त में आर्यसमाज एवं आर्यवीरदल के कार्य को गति प्रदान की जा सके। आशा है आप सभी अवश्य ही ध्यान देंगे। पूर्ण आशा और विश्वास के साथ- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती, प्रधान संचालक

स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस

शीश जिन के धर्म पर चढ़े।
झंडे उनके नाम के जहाँ में गढ़े।

23 दिसम्बर, 2013 को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी का 87वाँ बलिदान दिवस है। उनका बलिदान हमें उस काल का दिग्दर्शन कराता है जब देश हित पर मर मिटने वालों में होड़ मची थी। दयानंद के दीवाने शिष्य सिर पर कफन बांधे जान हथेली पर रख कर राष्ट्र की आजादी, उत्थान व समाज कल्याण तथा भारत की गौरवमयी सभ्यता व संस्कृति की पुनः स्थापना के लिये कृतसंकल्प थे। उन सब में महर्षि दयानंद के अधूरे कार्यों को पूरा करने की तड़प थी, जुनून था।

महर्षि दयानन्द जी की मृत्यु ने मुनिवर गुरुदत्त महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानंद, पं. लेखराम जी तथा पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की टोली को जन्म दिया। इन अमर बलिदानियों ने स्वामी दयानंद जी के स्मारक के रूप में डीएवी स्कूल लाहौर की स्थापना कर अपने अपने कार्यक्षेत्र में जुट गये। अपने जीवन की एक-एक सांस राष्ट्रहित व जनहित में आहूत कर दी गई परन्तु आज हम उनके बलिदानों को भूल चुके हैं। राष्ट्रीय स्वतंत्रता की धज्जियां उडाई जा रही है। राष्ट्रीय चरित्र एवं नैतिकता से हमारा कोई नाता ही नहीं है। पाश्चात्य सभ्यता व खान पान के हम पूर्णतया गुलाम बन चुके हैं। जो हमारे देश में होने वाले अधिकांश अपराधों का मूल कारण है-

महापुरुषों के जीवन प्रकाश स्तम्भ होते है। वह युग प्रवर्तक होते है। स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान दिवस के अवसर पर उनके द्वारा किये गये महान कार्यो का संक्षिप्त रूप प्रस्तुत कर उन्हें पुनः स्मरण कराने का प्रयास कर रही हूँ। शायद हमारे में से किन्हीं के हृदय में राष्ट्रप्रेम की लौ पुनः प्रज्ज्वलित हो उठे। जागने जगाने के लिए तो एक अनुकरणीय जीवन ही काफी है। जलता हुआ तो एक दीपक भी अनगिनत दीपों को जला देता है।

आओ विचारे बैठकर सभी। हम क्या थे और क्या हो गये। स्वामी श्रद्धानंद जी की सर्वोत्तम कृति थी गुरुकुल कांगडी हरिद्वार। क्योंकि आदर्श शिक्षा ही आदर्श जीवन का निर्माण करती है। शिक्षा का आधार था आश्रम प्रणाली और माध्यम था हिन्दी। उद्देश्य था वैदिक ज्ञान विज्ञान वैदिक धर्म तथा प्राचीन सभ्यता व संस्कृति का विकास करना। जिसकी आज महती आवश्यकता है। इसमें प्रवेश के लिये सभी जातियों व वर्णो के बच्चों के लिये द्वारा खुले थे। सबके साथ समानता का व्यवहार किया जाता था। सारी व्यवस्था स्वामी जी स्वयं सम्भालते थे। जब महात्मा गांधी जी स्वामी जी के दर्शन करने व उनके द्वारा भेजी गई राशि का आभार व्यक्त करने गुरुकुल आये तो गुरुकुलीय व्यवस्था को देखकर भाव-विभोर होकर कह उठे 'आर्य समाजियों के कार्यो का सर्वोत्तम परिणाम गुरुकुल कांगडी हरिद्वार है'

अंग्रेज सरकारी अधिकारी व राजकर्मचारी इस संस्था से इतने भयभीत हुए कि इसे राजद्रोही संस्था घोषित कर दिया। आरोप लगाया

www.thearyasamaj.org

कि यहां सरकार विरोधी गतिविधियां चलती है। बम निर्माण भी किया जाता है। इसी सशय से ले. गवर्नर जार्ज मेस्टन चार बार गुरुकुल आये। यहां की सुव्यवस्था से इतने प्रभावित हुए और कहा 'आदर्श युनिवर्सिटी की मेरी भावना का यह प्रतीक है। गुरुकुल आर्यो की भावना और सिद्धांतों का अत्यन्त उत्कृष्ट मूर्तरूप है।'

उस समय मैकाले की शिक्षा प्रणाली का एक मात्र मुंह तोड़ जवाब था- गुरुकुल कागडी महात्मा गांधी को महात्मा अलंकार स्वामीजी द्वारा दिया गया उपहार है। इस संस्था के ब्रह्मचारी देश में घटित होने वाली हर आपदा, चाहे प्राकृतिक हो या मानवीय में सहायता देने के लिये सदा तत्पर रहते थे। यही उनके जीवन का लक्ष्य भी था। देश विदेश के कोने कोने से विद्यार्थी यहां शिक्षा, ज्ञान प्राप्त करने आते और स्वयं को धन्य मानते थे। इस संस्था को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त थी। यही स्वामी जी का सर्वोत्कृष्ट अमर स्मारक है जिसकी उन्नति के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

उन दिनों धन, धरती व जन (शिष्यों) का पूर्ण अभाव था। स्वामी जी ने प्रतिज्ञा की कि जब तक तीस हजार रूपये इकट्ठे नहीं कर लूंगा तब तक घर नहीं लौटूंगा। मेहनत रंग लाई। 1900 ई. में 40 हजार रुपये इकट्ठे हो गये। राईस चौधरी मुंशी, अमनसिंह ने अपना कांगड़ी गांव तथा आस-पास की 1200 बीघा भूमिदान में दी और स्वामी जी ने अपने दोनों योग्य पुत्र गुरुकुल को अर्पण कर दिये। अत: 1902 ई. में वैसाखी के दिन गुरुकुल कांगडी की हरिद्वार के बीहड परन्तु प्राकृतिक वातावरण में स्थापना की। विपदाओं की कल्पना आप स्वयं कर सकते है। इसकी व्यवस्था के लिए उन्होंने चलती वकालत को लात मारी। भावी खर्चे के लिए अपना पुस्तकालय तथा सधर्म प्रचारक अपना प्रेस तथा अंत में अपनी जालंधर की विशाल कोठी भी न्यौछावर कर के सर्वमेध यज्ञ की पूर्णाहुति की। आज के गुरु व व्यवस्थापक सम्पत्ति न्यौछावर नहीं करते बल्कि संस्थाओं से छीनते है। यही अंतर है मानव महामानव में।

आज हम कहां खड़े हैं, कितने बौने हैं। 1917 ई. में उन्होंने संन्यास ग्रहण किया। अपना नाम श्रद्धानंद रखा। अब हरिद्वार छोड़ दिल्ली आकर बस गये और राजनीति में सक्रिय हो गये। दिल्ली के सार्वजनिक जीवन में उनका बहुत ऊँचा स्थान हो गया। वायसराय नहीं स्वामीजी दिल्ली के बेताज बादशाह थे। उनका एक शब्द व अंगुली का इशारा ही भारतीयों के लिए कानून था। वह स्वयं जज थे। वह त्याग तथा निर्भीकता की मिसाल थे। गांधी जी की गिरफ्तारी के बाद रौलट एक्ट के विरोध में दिल्ली में विशाल जुलूस निकाला गया। गोरखा जवानों ने जब जुलूस पर गोली चलाने की धमकी दी तो तुरन्त स्वामीजी ने अपनी छाती नंगी कर संगीनों के सामने आकर कहा यदि हिम्मत है तो चलाओं मुझ पर गोली। संगीने झुक गई लोग शांति पूर्वक तितर बितर हो गये।

जलियां वाला बाग के बर्बर नरसंहार के तुरन्त बाद कांग्रेस का अधिवेशन अमृतसर में रखा गया। इस अधिवेशन की व्यवस्था का गुरूत्तर भार स्वामी जी के कंधों पर रख दिया। उस समय ब्रिटिश सरकार पंजाब को अत्याचारों की भट्टी में भूनना तथा खून की नदी में डुबोने के साथ-साथ पंजाबियों के स्टील के दिमाग को भी भस्मीभूत करना चाहती थी। इतनी विपरीत परिस्थितियों में भी कांग्रेस अधिवेशन सफल रहा। जिसका श्रेय श्रद्धानंद जी तथा अमृतसर वासियों को जाता है। स्वामी जी के निर्देश पर प्रत्येक घर अतिथि गृह बन गया। अपने हिन्दी भाषा में दिये गये अध्यक्षीय भाषण में कहा- हे आर्यो स्वयं सदाचार की मूर्ति बनकर अपनी भावी पीढ़ी के लिए सदाचार की नींव रखो अन्यथा तुम्हारी संतान पाश्चात्य सभ्यता व विचारों में डूब कर विनाश को प्राप्त होगी। उनकी भविष्यवाणी आज सत्य साबित हो रही है।

सरकार के अत्याचारों के विरोध में सिक्खों ने 10.1.1922 ई. को गुरु के बाग में आंदोलन रखा। एक ही इशारे पर स्वामी जी 1000 व्यक्तियों तथा 15000 रूपयों की भेंट लेकर एक बजे शिरोमणि गुरुद्वारा अमृतसर पहुंच गये। इनती बड़ी सहायता की किसी को आशा नहीं थी। वही हुआ जो होना था। सिक्खों ने जयकारों से आकाश गुंजा दिया परन्तु सायंकाल के पांच बजे उन्हें बंदी बना 1 वर्ष 4 मास की सजा सुना मियावाली जेल में बंद कर दिया। कांग्रेस के मंच से हरिजन उद्धार की आवाज उठाते हुए सूचना दी कि जिन साढे छ: करोड़ हरिजन भाइयों को सरकार ने ईसाई घोषित किया है वह पुन: लौटकर हमारे समाज का अंग बन देश व समाजकल्याण में हमारे साथ कंधे से कंधा मिलाकर एक दूसरे का हाथ पकड़कर जातीय उद्देश्य को पूरा करेंगे। स्वामीजी ने सुझाव दिया कि इसे कांग्रेस के कार्यक्रम में शामिल कर दिया जाए परन्तु वर्किंग कमेटी ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। स्वामीजी ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया। स्वयं अकेले ने ही दलितोद्धार सभा बनाकर आजीवन इस कार्य अर्थात् शुद्धीकरण में लगे रहे जो उनकी शहादत का कारण बना। आज इन्हीं बलिदानियों की टोपी अपने सिर पर ओढ़कर हमारी सरकार अपने पूर्वजों के बलिदानों की दुहाई देकर वोट मांगती है। अमृतसर अधिवेशन के बाद स्वामी जी मुख्यत: दिल्ली में रह कर ही अस्पृश्यता निवारण शुद्धीकरण व आर्यसमाज संगठन को अर्पित रहे। 23 दिसम्बर 1926 को एक धर्मान्ध मुसलमान युवक अब्दुल रशीद की तीन गोलियों से जबकि वे लम्बे समय से रोग शैया पर पड़े थे, उनके जीवन का दु:खद परन्तु वीरोचित अंत हुआ। उनकी हत्या पर दु:ख प्रकट करते हुए गांधी जी ने कहा था- वह कर्मवीर थे, वे धर्म, श्रद्धा, सत्य, निर्भीकता तथा वीरता के मूर्तिमान प्रतीक थे। वह वीर योद्धा थे। योद्धा कभी रोग शैया पर प्राण नहीं त्यागते। उन्होंने एक मात्र सत्य के लिए भारत माता की वेदी पर अपना जीवन समर्पित किया हुआ था। भारत माता के एक देशभक्त सपूत की बर्बर हत्या से ऐसी क्षति हुई है जिसकी पूर्ति होना असम्भव है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ऐसे ज्योतिपुंज महापुरुषों के जीवन विशेष महत्व रखते है। ऐसे महान अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान दिवस के अवसर पर मैं गर्व पूर्वक उनके चरणों में चंद शब्दों द्वारा श्रद्धापूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ। आओ सब मिलकर बलिदान दिवस पर संकल्प करे- प्रतिज्ञा करते है कि संस्कृति की शाम नहीं होने देंगे। वीर शहीदों की समाधि बदनाम नहीं होने देंगे। जब तक तन में एक बूंद भी लहू की बाकी है भारत की आजादी को गुमनाम नहीं होने देंगे।

ओम् शान्ति, शान्ति, शान्ति

- अरूणा सतीजा, जयपुर

अच्छी आदतों से शक्ति की बचत होती है और अवगुणों से बर्बादी, इसलिए अवगुणों से दूर रहना चाहिए। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

www.thearyasamaj.org

हम कैसा ईश्वर चाहते हैं?

लेख का शीर्षक अधिकांश पाठकों को बेतुका लगेगा। है भी। ईश्वर क्या by choice होता है, इच्छा से मिला है? वास्तविकता तो यही है कि ईश्वर जैसा भी है, उसके स्वरूप को हमें पहचानना होगा, समझना होगा। वैदिकयुगीन ऋषि-महर्षियों का चिंतन इन्हीं बिन्दुओं पर केन्द्रित था।

वैदिककालीन ऋषियों ने ईश्वर का स्वरूप कैसा निर्धारण किया, उसके महर्षि दयानंद के शब्दों में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है-

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप[1], निराकार[2], सर्वशक्तिमान[3], न्यायकारी[4], दयालु[5], अजन्मा[6], अनन्त[7], निर्विकार[8], अनादि[9], अनुपम[10], सर्वाधार[11], सर्वेश्वर12,सर्वव्यापक[13], सर्वान्तर्यामी[14], अजर[15], अमर[16], अभय[17], नित्य[18], पवित्र[19] और सृष्टिकर्ता[20] है।

भू-मण्डल में ऐसे ईश्वर की स्वीकार्यता, मान्यता 1 अरब 96 करोड़ 8 लाख 53114 वर्ष रही। इसमें छः हजार वर्ष कम किये जा सकते हैं, क्योंकि विद्वान मानते हैं कि महाभारत से एक हजार वर्ष पूर्व वैदिक सभ्यता का तिरोहन प्रारम्भ हो गया था।

वास्तविकता के धरातल पर हम विचार करें तो उपर्युक्त गुणों से सम्प्रक्त ईश्वर की स्वीकार्यता हमें दिखाई नहीं पड़ती। आज हम ईश्वर का स्वरूप अपनी इच्छा के अनुसार निर्धारित करना चाहते हैं या यों कहें कि हम अपनी इच्छा का ईश्वर चाहते हैं।

हम माँग, मनोकामना, मन्नत पूरी करने वाला ईश्वर चाहते हैं। माँग, मन्नत यदि कब्र में लेटा हुआ मुर्दा भी पूरी कर सकता है, तो वह भी चलेगा। हमें मालूम ही नहीं है कि वेदोक्त ईश्वर ने सृष्टि रचना के साथ जीवात्मा की समस्त न्यायोचित माँगों को- लोक कल्याण को, जीव के चहुँमुखी कल्याण को, आजीवन पूरी करने का ठेका ले लिया था। उन्हें पूरी करने का रास्ता भी बता दिया था। हम उस रास्ते पर चलना नहीं चाहते। चाहें वेद कहें या गीत-अन्यथा ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का वह स्वरूप नहीं होता जो आज उपासना गृहों में सर्वत्र दिखलाई पड़ता है। लोग शुद्ध मन से ईश्वर की, केवल ईश्वर की उपासना के लिये इन उपासना गृहों में नहीं जाते। श्रद्धासुमन के साथ रिश्वत का प्रस्ताव भी अपनी आर्थिक सम्पन्नता के अनुरूप करते हैं। प्रसाद से लेकर स्वर्ण मुकुट भेंट करने तक। मन्नत पूरी न करने पर धौंस देते हैं-तेरी चौखट पर नहीं आयेंगे। यह प्यार भरा उलहना नहीं है। दुःख, निराशा व आक्रोश भरे उद्गार हैं।

इस एक बिन्दु के अतिरिक्त अन्य दो बिन्दुओं पर विचार करना मेरे आशय को पूर्णतया स्पष्ट करने के लिये आवश्यक है। दूसरा बिन्दु है- पापाचरण से मुक्ति। महर्षि दयानंद ने ईश्वर को न्यायकारी निरूपित किया है। न्यायकारी शब्द के अंतर्गत कर्मफल प्रदाता का गुण अंतभूत है। यह हम नहीं चाहते।

पौराणिक बन्धुओं के लिये तो पाप-ताप निवारण के लिये ईश्वर की आवश्यकता ही नहीं है। गंगा मैया ही काफी है। प्रत्येक कुम्भ पर करोड़ों हिन्दु भक्तों के पाप गंगा मैया बिना डिटरजेंट लगाए (बिना कर्मफल दिये) धो डालती हैं। यदि इस प्रक्रिया को पूर्णतया सत्य भी मान लें तो गंगा मैया उन भक्तों से क्यों नहीं कहती कि इस बार तुम्हें पाप मुक्त करती हूँ, अगली बार नहीं करूँगी। लेकिन गंगा तो मुक्तिदायिनी जलप्रवाह है। पाप करके आइए, वह पाप धो देगी। आपका काम है पाप करना और गंगा का काम है, पाप धोना। यह कार्य निरन्तर उस समय से चल रहा है जबसे गंगा को पाप धोने का ठेका धर्म धुरीणों ने अयाचित ही दे दिया था। वेदोक्त ईश्वर कहता है कि पाप कर्म से बिना यथोचित दण्ड पाये निवृत्ति नहीं, छुटकारा नहीं। गंभीर दुराचरण की कड़ी से कड़ी दण्ड व्यवस्था। प्रत्येक पापकर्म की दण्ड व्यवस्था। गंगा पूछती नहीं कि कौन सा पाप किया है। एक डुबकी लगाई और एक नहीं, सब पाप धुल गए।

पाप निवृत्ति का यह प्रसंग ईश्वर की न्याय व्यवस्था से जुड़ा है। महर्षि ने संदर्भित वर्णन में ईश्वर का न्यायकारी होना भी बताया है। ईश्वर का वेदोक्त न्यायकारी स्वरूप विश्व भर के 99.99 प्रति जनसमुदाय को स्वीकार्य नहीं है। प्रतिशत बढ़ाकर शत् प्रतिशत कर सकता हूँ पर अज्ञात् ईश्वर भक्तों के लिए कुछ गुंजाइश तो इस अल्पज्ञ को छोड़नी ही पड़ेगी।

ईश्वर को न्यायकारी तो सब कहते हैं। पर ऐसा न्यायाधीश जो उनके ही पक्ष में निर्णय दे। चाहे वे गलत हो या सही हो। हम ईश्वर को भी उसी रूप में देखना चाहते हैं जिस रूप में मानवीय न्यायालयों में दिखाई पड़ता है। मानवीय न्यायालयों में निर्णय गवाह, सबूत के आधार पर होता है। गवाह, सबूत ऐसे होने चाहिये जिनसे न्यायाधीश पूर्णतया संतुष्ट हो अन्यथा शक की स्थिति में लाभ-आरोपी को मिलता है। हमारे यहाँ तो ब्रिटिश न्याय व्यवस्था की परम्परा अक्षरशः निभाई जा रही है। सौ अपराधी छूट जावें, लेकिन एक निरपरार्ध को सजा नहीं मिले। ऐसी मानसिकता से अपराधियों को सजा मिलने की संभावना कम होती है। न्याय व्यवस्था की कई सीढ़ियां हैं। ट्रायल कोर्ट से लेकर उच्चत्तम न्यायालय तक। फिर जघन्य अपराधों में मृत्युदण्ड पाये अपराधियों की दया याचना के लिये राष्ट्रपति महोदय का द्वार खुला है। यह स्थिति है, मानवीय अदालतों की।

वैदिक ईश्वर की न्याय व्यवस्था में एक मात्र न्यायाधीश वही है। न उसके नीचे कोई अदालत है और न कोई ऊपर। उसे गवाह, सबूत, सिफारिश किसी की जरूरत नहीं क्योंकि वह सर्वान्तर्यामी है। पक्ष और विपक्ष दोनों ही पक्षकारों के कर्मों की उसे पूरी पूरी जानकारी है। वह न्याय करता है, फैसला नहीं। फैसले मानवीय अदालतें करती हैं। जितना बड़ा वकील, उसके तर्कों की उतनी पैनी धार, लेकिन कभी यहाँ भी दाव गलत पड़ जाता है। एक पेशी के साढ़े चार करोड़ रुपये डकार लेने के बाद भी जेठमलानी आसाराम बापू को जमानत नहीं दिलवा सके। खैर छोड़िए।

www.thearyasamaj.org

वेदोक्त ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी होने में यानी जहाँ प्रकरण घटित हुआ, वहाँ भी वह मौजूद था। जिन व्यक्तियों के बीच घटा उनकी आत्मा के साथ मैं विराजमान था। इसलिये वह यथातथ्य न्याय करता है। उसे डराया, फुसलाया नहीं जा सकता। उसके निर्णय की अपील नहीं क्योंकि उसके ऊपर, नीचे कोई नहीं। दण्ड कम-ज्यादा होने की गुंजाइश नहीं। व्यक्ति जानता है उसने पाप किया है, अपराध किया है। तरुण तेजपाल की तरह अपराध की स्वीकृति करने पर, पीड़िता से क्षमा याचना करने पर तथा स्वयं को कार्य से छः माह के लिये निष्कासन का दण्ड भोगने परभी अपराध की निवृत्ति नहीं होगी। बताइये ऐसा ईश्वर कौन चाहेगा?

इस्लाम व ईसाईयत के पापाचरण से मुक्ति, छुटकारे के दावे यदि सामान्य बौद्धिक स्तर पर स्वीकार्य होते तो संपूर्ण विश्व बिना खून-खराबे के स्वतः प्रसन्नतापूर्वक ये धर्म अपना लेता और पूरी शांति से रहता। लेकिन ऐसा है नहीं।

इस्लाम में अल्लाहताला का न्याय रसूल की सिफारिश पर निर्भर करता है और केवल इस्लाम के अनुयायियों पर ही लागू होता है। वेदोक्त ईश्वर की तरह, विश्व के समस्त मानव समुदाय पर नहीं। इस्लाम में अनुयायियों के गुनाह सुनाने/बताने के लिये रसूल की आवश्यकता है और इस जीवनकाल में पौराणिक भाइयों की तरह पापनिवृत्ति की कोई व्यवस्था नहीं है। दूसरे अल्लाहताला की अदालत का फैसला केवल एक दिन यानी कयामत के दिन ही होगा। तब तक कब्र में ही रहना होगा।

ईसाईयत में यह कार्य ईसामसीह करते हैं उन तक सिफारिश पहुँचाने का काम पादरी लोग 'पाप की स्वीकृति (कनफैशन)' कराकर करते हैं। इस तरह ईसाईयत में पापमुक्ति की दो टियरवाली व्यवस्था है। पाप कर्मो की मुक्ति की गारण्टी दोनों धर्मो (मतों) में है।

अब आप ही बताइयें, हमें किस धर्म को मानने में लाभ है। एक वह जो पाप कर्मो से मुक्ति की गारण्टी, शत-प्रतिशत गारण्टी दे या वह जो न्यायानुसार दण्ड विधान की व्यवस्था करे। बड़ा कठिन है वेदोक्त न्यायकारी ईश्वर को मानने में लाभ है। एक वह जो पाप कर्मो से मुक्ति की गारण्टी, शत-प्रतिशत गारण्टी दे या वह जो न्यायानुसार दण्ड विधान की व्यवस्था करे। बड़ा कठिन है वेदोक्त न्यायकारी ईश्वर को मानना।

वेदोक्त संस्कृति, उसकी ईश्वर की अवधारणा, सृष्टि उत्पत्ति के साथ ही एक अरब 96 करोड़ 8 लाख 53 हजार 114, (-) 6 हजार, वर्ष तक इस भूमण्डल पर रही। इस विरासत का अंतिम उत्तराधिकारी महर्षि जैमिनी को माना जाता है। छः हजार वर्ष के अंतराल के पश्चात् गुरु विरजानंद को सौपा। जिस पथ पर महर्षि दयानंद को चलना पड़ा था वह पथ आज भी उतना ही कंटकाकीर्ण है और उस पथ पर चलने वाले का हश्र भी उतना ही सुनिश्चित है जो महर्षि दयानंद का हुआ।

-अभिमन्यु कुमार खुल्लर, ग्वालियर

अर्न्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दक्षिण अफ्रीका - उषावेन देसाई एवं डॉ. रामविलास के नेतृत्व में

दि. 30 नवम्बर 2013 को दोपहर 2 बजे डरबन के उपनगर फीनिक्स में शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य महिला एवं बाल उत्पीड़न के विरोध में आवाज उठाना था। यह शोभायात्रा फीनिक्स के रायडाल्वेल ग्राउण्ड्स से प्रारंभ हुई जिसका नेतृत्व आचार्य बलदेव ने किया। शोभायात्रा में सबसे आगे सन्यासी वृन्द, साउथ अफ्रीका आर्य समाज की प्रधान श्रीमती ऊषा बेन पटेल, कार्यक्रम संयोजक डॉ. राम विलास व अन्य चल रहे थे, उनके पीछे आर्य समाज के राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय पदाधिकारी व सम्मेलन में भाग लेने आए भारतीय व अन्य देशों के प्रतिभागी हाथों में तख्तियां जिन पर नारे लिखे हुए थे लेकर चल रहे थे।

इस शोभायात्रा में कोटा के अर्जुनदेव चड्ढा भी हैंड माइक संभालते हुए हिन्दी में नारे लगवा रहे थे। ''महिलाओं और बच्चों पर उत्पीड़न बंद हों, ''बलात्कार बंद हों'', ''नशा छोड़ो-जीवन मोड़ो'', ''वैदिक धर्मकी जय'', ''आर्य समाज अमर रहे'' इत्यादि नारों से वातावरण गुंजायमान हो रहा था। शोभायात्रा में विभिन्न देशों से आये व स्थानीय आर्य समाजी तथा स्थानीय नागरिक जिनकी संख्या 1000 से अधिक थी, नारे लगाते हुये चल रहे थे। पूरे फीनिक्स क्षेत्र के मुख्य मार्गों पर होते हुए लगभग 5 किलोमीटर की यात्रा पूरी कर शोभायात्रा वापस रायडाल्वेल ग्राउण्ड्स पर समाप्त हुई। शोभायात्रा की सुरक्षा व्यवस्था हेलीकॉप्टर से हो रही थी तथा महिला एवं पुरुष पुलिस बल इसके साथ तैनात था। इस शोभायात्रा में दक्षिण अफ्रीका में बसे अन्य हिन्दू मतावलम्बी भी उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए।

रायडाल्वेल के विशाल ग्राउण्ड में भव्य एवं सुसज्जित पांडाल में 251 कुंडीय महायज्ञ का आयोजन किया गया। प्रत्येक हवन कुण्ड के साथ आवश्यक सामग्री जिसमें हवन सामग्री, धृत, जलपात्र, कपूर, दीपक, माचिस, चम्मच व मिष्ठान्न आदि रखे गये थे। सारे हवन कुंड नये बनवाये गये थे। प्रत्येक हवन कुण्ड के चारों तरफ चार कुर्सियां लगवाई गयी थी जिस पर बैठकर आसानी से हवन किया जा सके।

इसी पांडाल में एक भव्य मंच बनाया गया था जिस पर सम्मेलन में आये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव व 20 से अधिक सन्यासी वृन्द विराजमान थे। सुन्दर व आकर्षक सजावट के साथ व्यवस्थित साउंड व्यवस्था थी। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. रामविलास ने प्रार्थना मंत्रों के साथ यज्ञ प्रारंभ करवाया तथा प्रार्थना के हर मंत्र की उन्होंने हिन्दी व अंग्रेजी में व्याख्या की। यज्ञ के दौरान टेंट के बाहर तेज हवाओं के साथ बरसात हो रही थी और अंदर वेद मंत्रों के साथ यज्ञ में आहुतियां डाली जा रही थी। 1000 से अधिक लोग इस यज्ञ में सम्मिलित हुए। पूर्णाहुति के साथ यज्ञ सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात मंच पर उपस्थित विद्वानों के प्रवचन हुए। इसके साथ ही संगीतमय भजनों की प्रस्तुति दी गई। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सभी के लिये सामूहिक भोज की व्यवस्था की।

अर्जुनदेव चड्ढा

दृढ़ विश्वास से कार्य करने वाला एक कृशकाय शरीर भी इतिहास को बदल सकता है। महात्मा गांधी

www.thearyasamaj.org

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-51 / 2011 - 2013 / आर. एन. आई नं. 10471/60

गुरुकुल हरिपुर द्वारा वेद प्रचार एवं सहायता शिविर

गुरुकुल हरिपुर विगत तीन वर्षों से विभिन्न प्रांतों में वेद प्रचार, समाजसेवा एवं शिक्षा, संस्कारों के कार्यों में निरन्तर लगा हुआ है। ईश्वर की महती अनुकम्पा से यहाँ गुरुकुल में स्थित विद्वान् कर्तव्यनिष्ठ, कर्मठ, नौजवान आचार्यों तथा गुरुकुल के सभी सम्मान्य सात्विक, ईमानदार अधिकारियों की प्रेरणा, मार्गदर्शन से चुन-चुनकर ऐसे स्थानों में सेवा एवं प्रचार कार्य किया जा रहा है, जो अद्भूत एवं अलौकिक है।

इसी क्रम में ओड़िशा के नवरंगपुर जिला जो कि जंगल एवं पहाड़ों से घिरा हुआ है, जहाँ के निवासी शिक्षा एवं संस्कृति से 80-90 प्रतिशत वंचित है, जहाँ के स्त्री एवं पुरुष अब भी तन को ढ़कने के लिये पूरे कपड़े भी नहीं पहनते, जहाँ के दो-तीन विकासखण्डों के गांवों में किसी भी संस्था के द्वारा यज्ञ आदि कार्यक्रम भी नहीं कराया गया।

ऐसे क्षेत्र में पहुँचकर गत 16-17 नवम्बर 2013 को गुरुकुल हरिपुर के तत्वावधान में 600 निर्धन परिवारों का चयनकर पापराहाण्डी विकास खण्ड के केन्दुगुड़ा, नुआकोट एवं गणभटा को केन्द्र बनाकर तीनों केन्द्रों में यज्ञ एवं प्रवचन कार्यक्रम के साथ-साथ प्रत्येक निर्धन परिवार को 25-25 किलो चावल जिसका मूल्य 20/- प्रतिकिलो के दर से 500/- एवं एक साड़ी जिसका मूल्य 200/- है। इस प्रकार एक परिवार को 700/- का सहयोग प्रदान करने की व्यवस्था जन सहयोग से की गई थी।

यह समस्त कार्यक्रम गुरुकुल के कुलपति सेवावीर महात्मा वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य (कोलकाता) गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य एवं दिलीप कुमार जिज्ञासु के प्रत्यक्ष उपस्थिति में तथा गुरुकुल के कार्यकर्ताओं एवं स्थानीय लोगों के पुरुषार्थ से सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल हरिपुर का वार्षिक महोत्सव

आप सबको सूचित करते हुए हमें हर्ष हो राह है कि आपके प्रिय गुरुकुल हरिपुर का चतुर्थ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिक महोत्सव 10,11,12 जनवरी 2014 को अनेक प्रेरक सम्मेलनों- नारी जागृति सम्मेलन, वैदिक परिवार सम्मेलन, संस्कार रक्षा सम्मेलन तथा गुरुकुल सम्मेलन के सथ स्वनामधन्य अनेक वैदिक पूज्य संन्यासियों एवं विद्वानों की पवित्र उपस्थिति में सम्पन्न होने जा रहा है। आप सभी ईश्वरानुरागी, धर्मपेमी, यज्ञप्रेमी, गुरुकुलप्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि आप सपरिवार इष्ट मित्र बंधु-बांधवों सहित पधारकर लाभान्वित होने की अनुकम्पा करें। - दिलीप कुमार जिज्ञासु, आचार्य

87 वाँ अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

आर्य समाज अरावली विहार (काला कुआँ), अलवर में

दिनांक 25 दिसम्बर 2013, बुधवार को
प्रातः 8 बजे से 12.30 बजे तक

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी वैदिक संस्कृति की रक्षार्थ प्राणों की आहुति देने वाले अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का 87वाँ बलिदान दिवस समारोह आर्य समाज अरावली विहार (काला कुआँ), अलवर में दिनांक 25 दिसम्बर 2013 को प्रातः 8 बजे से 12.30 बजे तक श्रद्धापूर्वक मनाया जावेगा। आप सभी से अनुरोध है कि पुनीत कर्तव्य समझकर परिवारजनों व ईष्ट मित्रों सहित श्रद्धांजली समारोह में पधारने का श्रम करें।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
के उपलब्ध में
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवा समाज, राजस्थान
के संयुक्त तत्वावधान में समायोजित

सर्वेष्टि यज्ञमहोत्सव

'आओ, श्रद्धा के साथ आनन्द की ओर चलें!'

के शुभावसर पर आप सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित है। मुख्य अतिथि- आर्य शिरोमणि श्री पूनम सूरी जी (प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्तृ समिति, नई-दिल्ली)

दिनांक 22 दिसम्बर, 2013 (रविवार) समयः प्रातः 9 बजे से
स्थान- डी.ए.वी. सेंटेनरी पब्लिक स्कूल, वैशाली नगर, जयपुर

एक दीपक लड़ रहा है, अनवरत अंधियार से।
लड़ रहा है कालिमा के क्रूरतम परिवार से।
सूर्य की पहली किरण तक युद्ध यह चलता रहे,
इसलिये अनिवार्य है कि दीपक यह जलता रहे॥

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक :
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर - 302004

प्रेषित

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। उनसे संम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।